

विल्ट महा आदर्श महाविद्यालय, बहेड़ी, दरभंगा  
(L.N.M.U)

मैथिली प्रतिष्ठा  
रूनात्मक तृतीय खण्ड  
पंचम पत्र - मैथिली साहित्यिक इतिहास  
आधुनिक काल मात्र

नरेश कुमार  
सहायक प्राचार्य  
मैथिली विभाग  
दिनांक 23/09/2020

व्याख्यानक संक्षिप्त अंश (दोसर भाग)

प्रश्न :- आरसी प्रसाद सिंहक काव्यक परिचय दिअ ।

उत्तर :- कविता 'वीफालिका' 1937 ई० मे लिखल गेल ।

गीतिक सरस लक्ष्मे प्रकृतिक उल्लेख करैक प्रभावोत्पादक  
अर्थ -

मेघ लगै छै लुन्न अरै छै नचइत मन मोर रे ।

ले कोन प्रिया केर कजरायल टूट, आइ भर मोर रे ॥

मातृभूमिक प्रति अनुराग ई स्वदेश शीर्षक कवितामे  
अत्यन्त स्वाभाविक ढंगसँ कथने छथि -

बाड़ी - झाड़ी लतइल पान, पोखरि - पोखरि फूल  
मखान ।

राइ वाटमे भुंजित होइछ विद्यापतिक मनोहर गान ॥

अपन मातृभाषा ओ मातृभूमिक अधिकारकेँ ओ रहि सकेँ मंगल बापि -

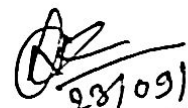
माँगी रहल छी प्रथम भाइ हम मातृजन वाणी ।

माँगी रहल छी हम विदेह भू भाषा चिरकल्पाणी ॥

सामन्तवादक भावनाक उद्घोष करैत वर्तमान युगक युवक  
लोकनिके प्रेरित करु सचेष्ट करैत छथि -

चलि ने सकेँ भादि भाव सवारि होवा कालिके ।

ई अदराक मेघ नही मानत रहत बरसिके ॥

  
23/09/2020